खेती अपनी संस्कृति

हमारा भारत देश बहुत सी संस्कृतियों से भरा हुआ हैं। यहा पर तरह-तरह के तोहार, भाषा, वेष और कलाएँ है। और उसी में से एक हमारी एहम संस्कृति है खेती। हमारा देश जग में सबसे ज्यादा खेती करनेवाला एकमात्र देश है। भारत में अनेक धान्यों का उतपाद किया जाता है। खेती हमारे भारत के संस्कृति में अहम भुमीका निभाती है, और कई जगहो में तो इसकी पूजा भी की जाती है। खेती करना हमारे पुरव जो के काल से चली आती प्रथा है। भारत में सबसे पहले चालू होने वाला व्यवसाय खेती है।

पर अब लोग खेत का महत्व भुल रहें हैं। पहले जब हर साल भारत की सबसे उत्पादक व्यवसाय को परकते थे तो सबसे पहला नाम खेती का आता था। पर अब भारत

में खेती करने वालों की संखया घटती जा रही है। दिन ब दिन खेती कम होती जा रही है। लोग खेती से अन्य व्यवसायों की ओर बढ रहे हैं। पहले हमारा भारत खेती करके उससे मिलने वाले उलपनो को अन्य राज्यों में पहुँचाता था लेकिन अब भारत को उनही उलपनों केलिय दुसरे देशो पर अश्रयीत होना पड़ रहा है। भारत की खेती करने की संस्कृती ~~धिरे-धिरे~~ धीरे-धीरे मिटती जा रही है। और इसी कारण भारत को अनेक मुशकिलों का सामना करना पड़ा रहा है।

खेती की कमी के कारण भारत के समान्य जनता जो खेती करके अपना पेट भरते है उनके जीवन में बहुत ज्यादा प्रभाव पढ राहा है। किसानों को उनके उलपनों के दामो से कम दाम मिलता है। और इस कारण उनके आरथीक स्थीती पर प्रभाव पढ रहा है। वे करजों के भार के तले दब रहें हैं।

और इसी कारण भारत में हर साल किसान खुदखुशी कर अपनी जान ले रहे है। हम इस विशय पर जल्द ही कुछ करना चाहिए।

हम अगर स्कुल छात्रो पुछे की वो अगे चल कर क्या बनना चाहते है, उसमें से अधिक छात्र डॉक्टर, वकिल, टीचर और इंजीनीयर आदी बनना पर उसमे से कुछ प्रतीक्षत छात्र ही किसान बनने के अशय को व्यक्त करेगें। इसी कारण ही खेती कम हो रही है। और अगर हम उन छात्रों के पुरबजों के बारे में पता लगायेगें तो उनमे से अधिक तर लोग खेती करने वाले ही होंगे। सिरफ छात्र ही नही लेकिन उनके माता-पिता भी वह एक किसान बने यह नही चहते।

पर हमें लोगो के मन में से खेती करना एक छोटा काम है यह अशय

मिटाना होगा। एक किसान अपना खुन-पसिना बहा कर कड़ी धुप में महनत कर फसल उगाता है, अपने लिए नही अपने देश केलिए तो खेती एक छोटा काम कैसे हो सकता है? अगर खेती करना पुरी तरह से बंद हो गया तो हमारा देश कई अरथीक समस्याओं का सामना करेगा।

हर एक व्यक्ति को खेती करने का महत्व, किसानों की महनत और खेत ना करने से होने वाली समस्याओं को समझना चाहिए। खेती राजामाहाराजाओं के युग से चलती आने वाली प्रथा है। उस वक्त खेती ही पैसे कमाने का एकमात्र मार्ग था। और राजाए खेती से ही अपने सामराज्य को विशाल बनाते थे।

हमे उसे संस्कृति को वापस ला कर आगे बढ़ाना होगा। और इसकी शुरुवात विद्यारथीयो से ही होनी चाहिए

क्योकी वह ही हमारे आने वाले भविशय को सुधार कर बहतर बना सकते है। अगर उनको अच्छा मार्ग मिले तो वे इस क्षेत्र में भी उतं स्थान प्रापत कर सकते हैं। और खेती करने की हमारी भारतीय संस्कृति को बढाने में सक्षम रेह सकते हैं।

अगर हम किसान ना हो फिर भी अपने घरो के अंगन में, ~~टेरस~~ छत पर छोटी सी क्यो ना हो खेती केलिए स्थान बनाना चाहिए। और वहा पर अपने ही घरेलु उपयोग के लिए उलपन उतपाद करने चाहिए इससे हमारा ही फायदा होगा।

~~और रही बात खेती में भी~~

कई लोग खेती इसलिए नहीं करते है, क्योकी खेती में नुकसान होने की संभावना है जैसे की कभी फसल का उगने में प्रयास या किडो के कारण फसलो को

होने वाली ~~के कारण होने~~ नुकसान। पर इस परेशानी पर भी तोड़ है, अधुनिक काल में कई वैज्ञानीक उपायोसे हम इन प्रशनो का हल कर सकते है।

तो चलीए हम खेती के महत्व को समझकर, खेती करने को बढावा देते है। और हमारी पुरानी संस्कृति को आगे बढाते है। खेती कर अपने देश को हरियाली से भरते है। जहा लोग खेती को नष्ट कर बडी-बडी इमारते बनाते है, वाहा हम उन इमारतो को तोड कर उस जगह को हरियाली से सुंदर बनाते। जो बच्चे खेती और खेती करने के ज्ञान से वंचित है, उनका हाथ पकड़ कर उन्हे खेती से हरि भरि भुमी की और ले चलते है। और भविश को बहतर बनाने कर ~~'खेती~~ केलिए 'खेती हमारी संस्कृति' इस अशय को अगे रख कर चलते है।